एदेसिं बंधयाणं परूवणट्ठदाए तत्थ इमाणि एक्कारस अणियोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति ॥ १ ॥

अण्णट्ठेसु[1] बंधएसु कधमेदेसिं बंधयाणमिदि पच्चक्खणिद्देसो उववज्जदे ? ण, एस दोसो, बंधगविसयबुद्धीए पच्चक्खत्तमवेक्खिय पच्चक्खणिद्देसुववत्तीदो । संताणियोगद्दारं पुव्वमपरूविय तेण सह बारसअणियोगद्दारेहि बंधगाणं किण्ण परूवणा कीरदे? ण, बंधत्तेण असिद्धाणं तस्सिद्धिपरूवणाए बंधगपरूवणत्ताणुववत्तीदो। तेसिमेक्कारसअणियोगद्दाराणं णामणिद्देसट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि

एगजीवेण सामित्तं, एगजीवेण कालो, एगजीवेण अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ, दव्वपरूवणाणुगमो, खेत्ताणुगमो, फोसणाणुगमो, णाणाजीवेहि कालो, अंतरं भागाभागाणुगमो, अप्पाबहुगाणुगमो चेदि ॥ २ ॥

इन बन्धकोंकी प्ररूपणारूप प्रयोजनके होनेपर वहां ये ग्यारह अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं ॥ १ ॥

शंका—अन्य अर्थोंमें बन्धकोंके रहने पर 'इन बन्धकोंका' इस प्रकार प्रत्यक्ष निर्देश कैसे बन सकता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं, क्योंकि, बन्धकविषयक बुद्धीसे प्रत्यक्षपनेकी अपेक्षा करके प्रत्यक्ष निर्देशकी उपपत्ति बन जाती है।

शंका—सत् अनुयोगद्वारको पहले ही प्ररूपित न करके उसके साथ बारह अनुयोगद्वारोंसे बन्धकोंकी प्ररूपणा क्यों नहीं की जाती ?

समाधान—नहीं, क्योंकि बन्धकभावसे असिद्ध जीवोंको बन्धक सिद्ध करनेवाली प्ररूपणाके लिये बन्धकप्ररूपणा नाम देना अनुपयुक्त ठहरता है।

उन ग्यारह अनुयोगद्वारोंके नामनिर्देशके लिये आचार्य अगला सूत्र कहते हैं—

एक जीवकी अपेक्षा स्वामित्व, एक जीवकी अपेक्षा काल, एक जीवकी अपेक्षा अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय द्रव्यप्ररूपणानुगम, क्षेत्रानुगम, स्पर्शनानुगम, नाना जीवोंकी अपेक्षा काल, अन्तर, भागाभागानुगम और अल्पबहुत्व ॥ २ ॥

---

१ अ. प्रतौ अणट्ठेसु, आ. क. स. प्रतिषु अण्णट्ठेसु इति पाठः

अंतिल्लो 'च' सद्दो समुच्चयत्थो। 'इदि' सद्दो एदेसिं बंधगाणं परूवणाए एत्तियाणि चेव अणियोगद्दाराणि होंति ण वड्ढिमाणि त्ति अवहारणट्ठं कदो। एगजीवेण सामित्तं पुव्वमेव किमट्ठं वुच्चदे? ण, उवरिल्लसव्वयाणिओगद्दाराणं[1] कारणत्तेण सामित्ताणियोगद्दारस्स अवट्ठाणादो। कुदो चोद्दसमग्गणट्ठाणं ओदइयादिपंचसु भावेसु को भावो कस्स मग्गणट्ठाणस्स सामिओ णिमित्तं होदि ण होदि त्ति सामित्ताणिओगद्दारं परूवेदि, पुणो तेण भावेण उवलक्खियमग्गणाए बंधएसु सेसाणिओगद्दारपवुत्तीदो। सेसाणिओगद्दारेसु कालो चेव किमट्ठं पुव्वं परूविज्जदि? ण, कालपरूवणाए विणा अंतरपरूवणाणुववत्तीदो। पुणो अंतरमेव वत्तव्वं, एगजीवसंबंधिगो अण्णस्स अणिओगद्दारस्साभावा। णाणाजीवसंबंधीएसु सेसाणिओगद्दारेसु पढमं णाणाजीवेहि भंगविचओ किमट्ठं वुच्चदे? ण, एदस्स मग्गणट्ठाणपवाहस्स विसेसो अणादिअपज्जवसिदो, एदस्स

सूत्रके अन्तमें आया हुआ 'च' शब्द समुच्चयार्थक है; और 'इन बन्धकोंकी प्ररूपणामें इतनेमात्र ही अनुयोगद्वार हैं, इनसे अधिक नहीं' ऐसा निश्चय करानेके लिये सूत्रमें 'इति' शब्दका प्रयोग किया गया है।

शंका—एक जीवकी अपेक्षा स्वामित्वका कथन सबसे पूर्वमें ही क्यों किया जाता है?

समाधान—नहीं, क्योंकि, यह स्वामित्वसम्बन्धी अनुयोगद्वार आगेके समस्त अनुयोगद्वारोंके नहीं, अवस्थित है। इसका कारण यह है कि चौदह मार्गणास्थान औदयिकादि पांच भावोंमेंसे किस भावरूप हैं, किस मार्गणास्थानका स्वामी निमित्त होता है या नहीं होता, यह सब स्वामित्वानुयोगद्वार प्ररूपित करता है पुनः उसी भावसे उपलक्षित मार्गणाके होनेपर बन्धकोंमें शेष अनुयोगद्वारोंकी प्रवृत्ति होती है।

शंका—शेष अनुयोगद्वारोंमें काल ही पहले क्यों प्ररूपित किया जाता है?

समाधान—नहीं, क्योंकि, कालकी प्ररूपणाके बिना अन्तर प्ररूपणाकी उपपत्ति नहीं बैठती। अतः अन्तर ही कहना चाहिये, क्योंकि, एक जीवसे सम्बन्ध रखनेवाला अन्य कोई अनुयोगद्वार नहीं पाया जाता।

शंका—नाना जीवसम्बन्धी शेष अनुयोगद्वारोंमें पहले नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय ही क्यों कहा जाता है?

समाधान—नहीं, क्योंकि, इस मार्गणास्थानके प्रवाहका एक विशेष (भेद) अनादि-अनंत

---

१ मु. ...ी सव्वयाणि इति पाठः।

सादिसपज्जवसिदो त्ति सामण्णेण अवगदे सेसाणिओगद्दाराणं पदणसंभवादो। दव्व-पमाणे अणवगदे खेत्तादिअणियोगद्दाराणमधिगमोवाओ णत्थि त्ति दव्वाणिओगद्दारस्स पुव्वणिवेसो कदो। वट्टमाणपासपरूवणाए विणा अदीद-वट्टमाणफासपरूवयफोसणाणि-ओगद्दाराधिगमोवाओ णत्थि त्ति खेत्ताणिओगद्दारस्स पुव्वं णिवेसो कदो। मग्गणाण-मत्थिदखेत्ते अवगदे तेसिं दव्वसंखाए च अवगदाए पच्छा तीदकालफासपरूवणा णाया-गदेत्ति णिवेसिदा। मग्गणकाले अणवगदे तेसिमंतरादिपरूवणा ण घडदि त्ति पुव्वं कालाणिओगद्दारं परूविदं। कालजोणि अन्तरमिदि कट्टु अन्तरं तदणंतरे परूविदं। पुरदो वुच्चमाणअप्पाबहुअस्स साहणो इदि कट्टु भागाभागो परूविदो। एदेसिं पच्छा अप्पा-बहुगाणुगमो परूविदो, सव्वाणिओगद्दारेसु पडिबद्धत्तादो।

णाणाजीवेहि काल-भंगविचयाणं को विसेसो? ण, णाणाजीवेहि भंगविचयस्स

है, इस तथा मार्गणास्थानके प्रवाहका एक भेद सादि सान्त है, ऐसा सामान्यरूपसे जान लेनेपर शेष अनुयोगद्वारोंका अवतार संभव है। द्रव्यप्रमाणके जाने बिना क्षेत्रादि शेष अनुयोगद्वारोंके जाननेका उपाय नहीं, इसलिये द्रव्यानुयोगद्वारका उनसे पहले स्थापन किया गया है। फिर उनमें भी वर्तमान स्पर्शन प्ररूपणाके बिना अतीत और वर्तमान स्पर्शनके प्ररूपक स्पर्शनानुयोग-द्वारके जाननेका उपाय नहीं, इसलिये क्षेत्रानुयोगद्वारका पहले निवेश किया। मार्गणाओंसम्बन्धी निवासक्षेत्रको जान लेने पर और उनके द्रव्यप्रमाणका भी ज्ञान हो जाने पर पश्चात् अतीतकाल-सम्बन्धी स्पर्शनप्ररूपणा न्यायागत है इसलिये उसे पहले रखा गया। मार्गणासम्बन्धी कालका जब तक ज्ञान न हो जाय तब तक उनकी अन्तरप्ररूपणा नहीं बनती अतः उससे पूर्व काला-नुयोगद्वारका प्ररूपण किया गया। काल अन्तरकी योनी है ऐसा जानकर कालके अनन्तर अन्तरानुयोगद्वार प्ररूपित किया गया। आगे कहे जानेवाले अल्पबहुत्वका साधन होनेसे पहले भागाभाग प्ररूपित किया गया। और इन सबके पश्चात् अल्पबहुत्वानुगम प्ररूपित किया गया। क्योंकि वह पूर्ववर्ती सभी अनुयोगद्वारोंसे सम्बद्ध है।

शंका—नाना जीवोंकी अपेक्षा काल और नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय इन दोनोंमें क्या भेद है।

समाधान—नहीं, क्योंकि नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय नामक अनुयोगद्वार मार्गणा-

मग्गणाणं विच्छेदाविच्छेदत्थित्तपरूवयस्स मग्गणकालंतरेहि सह एयत्तविरोहादो।

एयजीवेण सामित्तं ॥ ३ ॥

जहा उद्देसो तहा णिद्देसो त्ति णायाणुसरणट्ठमेगजीवेण सामित्तं भणिस्सामो इदि वुत्तं।

गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरईओ णाम कधं भवदि? ॥ ४ ॥

एदं पुच्छासुत्तं किण्णिबंधणं? णयसमूहणिबंधणं। जदि एक्को चेव णयो होज्ज तो संदेहो वि ण उप्पज्जेज्ज। किंतु णया बहुआ अत्थि। तेण संदेहो समुप्पज्जदे कस्स णयस्स विसयमस्सिदूण ट्ठिदणेरईओ एत्थ पडिग्गहिदो त्ति। णयाणमभिप्पाओ एत्थ उच्चदे। तं जहा---

कं पि णरं दट्ठूण य पावजणसमागमं करेमाणं।
णेगमणएण भण्णइ णेरइओ एस पुरिसो त्ति ॥ १ ॥

ओंके विच्छेद और अविच्छेदके अस्तित्वका प्ररूपक है, अतः उसका मार्गणाओंके काल और अन्तर बतलानेवाले अनुयोगद्वारोंके साथ एकत्व माननेमें विरोध आता है।

एक जीवकी अपेक्षा स्वामित्वकी प्ररूपणा की जाती है ॥ ३ ॥

'जैसा उद्देश होता है उसीके अनुसार निर्देश किया जाता है इस न्यायका अनुसरण करनेके लिये एक जीवकी अपेक्षा स्वामित्वका वर्णन करेंगे ऐसा प्रस्तुत सूत्रमें कहा गया है।

गतिमार्गणानुसार नरकगतिमें नारकी जीव किस प्रकार होते हैं ॥ ४ ॥

शंका---यह प्रश्नात्मक सूत्र किस आधारसे रचा गया है?

समाधान---यह प्रश्नात्मक सूत्र नयसमूहके आधारसे रचा गया है। यदि एक ही नय होता तो कोई सन्देह भी उत्पन्न नहीं होता। किन्तु नय अनेक हैं इसलिये सन्देह उत्पन्न होता है कि किस नयके विषयका आश्रय लेकर स्थित नारकी जीवका यहां ग्रहण किया गया है। यहांपर नयोंका अभिप्राय बतलाते हैं। वह इस प्रकार है---

किसी मनुष्यको पापी लोगोंका समागम करते हुए देखकर नैगम नयसे कहा जाता है कि यह पुरुष नारकी है।

(जब वह मनुष्य प्राणिवध करनेका विचार कर सामग्रीका संग्रह करता है तब वह संग्रह नयसे नारकी कहा जाता है।)

ववहारस्स दु वयणं जइया कोदंड-कंडगयहत्थो ।
भमइ मए मग्गंतो तइया सो होइ णेरइओ ॥ २ ॥
उज्जुसुदस्स दु वयणं जइआ इर ठाइदूण ठाणम्मि ।
आहणदि मए पावो तइया सो होइ णेरइओ ॥ ३ ॥
सद्दणयस्स दु वयणं जइया पाणेहि मोइदो जंतू ।
तइया सो णेरइयो हिंसाकम्मेण संजुत्तो ॥ ४ ॥
वयणं तु समभिरूढं णारयकम्मस्स बंधगो जइया ।
तइया सो णेरइओ णारयकम्मेण संजुत्तो ॥ ५ ॥
णिरयगइं संपत्तो जइया अणुहवइ णारयं दुक्खं ।
तइया सो णेरइओ एवंभूदो णओ भणदि ॥ ६ ॥

एदं सव्वणयविसयं णेरइयसमूहं बुद्धीए काऊण णेरइओ णाम कधं होदि त्ति पुच्छा कदा ।

अधवा णाम-ट्ठवण-दव्व-भावभेएण णेरइया चउव्विहा होंति । णामणेरइयो णाम णेरइयसद्दो । सो एसो त्ति बुद्धीए अप्पिदस्स अप्पिदेण एयत्तं[1] काऊण

व्यवहार नयका वचन इस प्रकार है—जब कोई मनुष्य हाथमें धनुष और बाण लिये मृगोंकी खोजमें भटकता फिरता है तब वह नारकी कहलाता है ॥ २ ॥

ऋजुसूत्र नयका वचन इस प्रकार है—आखेटस्थानपर पापी मृगोंपर आघात करता है तब वह नारकी कहलाता है ॥ ३ ॥

शब्द नयका वचन इस प्रकार है—जब जन्तु प्राणोंसे विमुक्त कर दिया जाय तभी वह आघात करनेवाला हिंसाकर्मसे संयुक्त मनुष्य नारकी कहा जाय ॥ ४ ॥

समभिरूढ नयका वचन इस प्रकार है—जब मनुष्य नारक कर्मका बन्धक होकर नारक कर्मसे संयुक्त हो जाय तभी वह नारकी कहा जाय ॥ ५ ॥

जब वही मनुष्य नरक गतिको प्राप्त होकर नरकके दुःख अनुभव करने लगता है तभी वह नारकी है, ऐसा एवंभूत नय कहता है ।

इन समस्त नयोंके विषयभूत नारकीसमूहका विचार करके ही 'नारकी जीव किस प्रकार होता है' यह प्रश्न किया गया है ।

अथवा, नाम, स्थापना, द्रव्य और भावके भेदसे नारकी चार प्रकारके होते हैं । नाम-नारकी 'नारकी' शब्दको ही कहते हैं । 'वह यह है' ऐसा बुद्धिसे विवक्षित नारकीका विवक्षित वस्तुके साथ

---

१ अ. क. प्रत्योः अप्पिदस्स एयत्तं, मु. प्रतौ अप्पिदस्स अप्पिदेण एयत्तं इति पाठः ।

सब्भावासब्भावसरूवेण ठविदं ठवणणेरइओ । णेरइयपाहुडजाणओ अणुवजुत्तो आगमदव्वणेरइओ । अणागमदव्वणेरइओ तिविहो जाणुगसरीर-भविय-तव्वदिरित्तभेएण । जाणुगसरीर-भवियं गदं । तव्वदिरित्तणोआगमदव्वणेरइओ णाम दुविहो कम्म-णोकम्मभेएण । कम्मणेरइओ णाम णिरयगदिसहगदकम्मदव्वसमूहो । पास-पंजर-जंतादीणि[1] णोकम्मदव्वाणि णेरइयभावकारणाणि णोकम्मदव्वणेरइओ णाम । णेरइयपाहुडजाणओ उवजुत्तो आगमभावणेरइओ णाम । णिरयगदिणामाए उदएण णिरयभावमुवगदो णोआगमभावणेरइओ णाम । एदं णेरइयसमूहं बुद्धीए काऊण णेरइओ णाम कधं होदि त्ति पुच्छा कदा ।

अधवा णेरइओ[2] णाम किमोदइएण भावेण, किमुवसमिएण, किं खइएण, किं खओवसमिएण, किं पारिणामिएण भावेण होदि त्ति बुद्धीए काऊण णेरइओ णाम कधं होदि त्ति वुत्तं ।

एदस्स संदेहस्स णिराकरणट्ठं उत्तरसुत्तं भणदि—

णिरयगदिणामाए उदएण ॥ ५ ॥

एकत्व करके सद्भाव और असद्भाव स्वरूपसे स्थापित स्थापना नारकी कहलाता है । नारकीसम्बन्धी प्राभृतका जाननेवाला किन्तु उसमें अनुपयुक्त जीव आगम द्रव्य नारकी है । ज्ञायक शरीर, भव्य और तद्व्यतिरिक्तके भेदसे अनागम द्रव्य नारकी तीन प्रकारका है । ज्ञायकशरीर और भव्य ज्ञात हैं । कर्म और नोकर्मके भेदसे तद्व्यतिरिक्त नो आगम द्रव्य नारकी दो प्रकारका है । नरकगति नामकर्मके साथ प्राप्त हुए कर्मद्रव्यसमूहको कर्मनारकी कहते हैं पाश, पंजर यंत्र आदि नोकर्मद्रव्य जो नारक भावकी उत्पत्तिमें कारणभूत होते हैं, वे नोकर्म द्रव्य नारकी हैं । नारकियों सम्बन्धी प्राभृतका जानकार और उसमें उपयोग रखनेवाला जीव आगम भाव नारकी है । नरकगति नामप्रकृतिके उदयसे नरकावस्थाको प्राप्त हुआ जीव नोआगम भाव नारकी है । इस नारकीसमूहका विचार करके ' नारकी जीव किस प्रकार होता है ' यह प्रश्न किया गया है ।

अथवा, ' क्या नारकी औदयिक भावसे होता है, क्या औपशमिक भावसे, क्या क्षायिक भावसे, क्या क्षायोपशमिक भावसे, क्या परिणामिक भावसे होता है ? ऐसा बुद्धिसे विचार कर ' नारकी जीव किस प्रकार होता है ? ' यह पूछा गया है ।

इस सन्देहको दूर करनेके लिये आचार्य अगला सूत्र कहते हैं—

नरकगति नामप्रकृतिके उदयसे जीव नारकी होता हैं ॥ ५ ॥

---

१ अ. क. प्रत्योः 'पंजरजंतादीणि' इतिपाठः । २ क. प्रतौ 'णेरओ' इति पाठः ।

एवंभूदणयविसएण ओदइणो णोआगम[1]भावणिक्खेवेण णिरयगदिणामाए उदएण णेरइओ णाम भवदि ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खो णाम कधं भवदि ? ॥ ६ ॥

एत्थ वि णए णिक्खेवे ओदइयादिपंचविहभावे च अस्सिदूण पुव्वं व संदेहस्सुप्पत्ती परूवेदव्वा ।

तिरिक्खगदिणामाए उदएण ॥ ७ ॥

तिरिक्खगदिणामकम्मोदएणुप्पण्णपज्जायपरिणदम्मि जीवे तिरिक्खाभिहाणववहार-पच्चयाणमुवलंभादो ।

मणुसगदीए मणुसो णाम कधं भवदि ? ॥ ८ ॥

एत्थ वि पुव्वं व णय-णिक्खेवादीहि संदेहुप्पत्ती परूवेदव्वा ।

मणुसगदिणामाए उदएण ॥ ९ ॥

कुदो ? मणुसगदिणामकम्मोदयजणिदपज्जायपरिणयजीवम्मि मणुस्साहिहाणवव-

---

एवंभूतनयके विषयरूप औदारिक नोआगमभावनिक्षेप की अपेक्षा नरकगति नामप्रकृतिके उदयसे जीव नारकी होता है ।

तिर्यंचगतिमें जीव तिर्यंच किस कारणसे होता है ? ॥ ६ ॥

यहां भी नय, निक्षेप और औदायिकादि पांच प्रकारके भावोंके आश्रयसे पूर्वोक्त विधिसे संदेहकी उत्पत्तीका प्ररूपण करना चाहिए ।

तिर्यंचगति नामप्रकृतिके उदयसे जीव तिर्यंच होता है ॥ ७ ॥

क्योंकि, तिर्यंचगति नामकर्मके उदयसे उत्पन्न हुई पर्यायसे परिणत जीवके तिर्यंच संज्ञाका व्यवहार और ज्ञान पाया जाता है ।

मनुष्यगतिमें जीव मनुष्य कैसे होता है ॥ ८ ॥

यहां भी पहलेके समान नय-निक्षेपादिरूपसे सन्देहकी उत्पत्तिका प्ररूपण करना चाहिये ।

मनुष्यगति नामप्रकृतिके उदयसे जीव मनुष्य होता है ॥ ९ ॥

क्योंकि, मनुष्यगति नामकर्मके उदयसे उत्पन्न हुई पर्यायसे परिणत जीवके

---

१ मु. प्रतौ 'एवंभूदणयवि उ, व णं.आवम' इति पाठः ।

हार-पच्चयाणमुवलंभा ।

देवगदीए देवो णाम कधं भवदि ? ॥ १० ॥

सुगममेदं ।

देवगदिणामाए उदएण ॥ ११ ॥

कुदो ? देवगदिणामकम्मोदयजणिदअणिमादिपज्जयपरिणदजीवम्मि देवाहिहाणववहार-पच्चयाणमुवलंभा । णिरय-तिरिक्ख-मणुस-देवगदिओ जदि केवलाओ उदयमागच्छंति तो णिरयगदिउदएण णेरइओ, तिरिक्खगदिउदएण तिरिक्खो, मणुस्सगदिउदएण मणुस्सो, देवगदिउदएण देवो त्ति वोत्तुं जुत्तं । किं तु अण्णाओ वि पयडीओ तत्थ उदयमागच्छंति, ताहि विणा णिरय-तिरिक्ख-मणुस्स-देवगदिणामाणमुदयाणुवलंभादो । तं जहा---

णेरइयाण पंच उदयट्ठाणाणि होंति एक्कवीस-पंचवीस-सत्तावीस-अट्ठावीस-एगूणतीसं ति । २१ । २५ । २७ । २८ । २९ । तत्थ इगवीसपयडिउदयट्ठाणं वुच्चदे । तं जहा – णिरयगदि-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-णिरयगदि-

---

मनुष्य संज्ञाका व्यवहार और ज्ञान पाया जाता है ।

देवगतिमें जीव देव कैसे होता है ? ॥ १० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

देवगति नामप्रकृतिके उदयसे जीव देव होता है ॥ ११ ॥

क्योंकि देवगति नामकर्मके उदयसे उत्पन्न हुई अणिमादिक पर्यायसे परिणत जीवके देव संज्ञाका व्यवहार और ज्ञान पाया जाता है ।

नरक, तिर्यंच मनुष्य और देव ये गतियां यदि केवल अपनी एक एक प्रकृति उदयमें आती हों तो नरकगतिके नारकी, तिर्यंचगतिके उदयसे तिर्यंच, मनुष्यगतिके उदयसे मनुष्य और देवगतिके उदयसे देव होता है, ऐसा कहना उचित है । किन्तु अन्य प्रकृतियां भी वहां उदयमें आती हैं जिनके विना नरक, तिर्यंच, मनुष्य और देवगति नामकर्मोंका उदय पाया नहीं जाता ? वह इस प्रकार है---

नारकी जीवोंके पांच उदयस्थान हैं--- इक्कीस, पच्चीस, सत्ताईस, अट्ठाईस और उनतीस प्रकृतियों सम्बन्धी २१ । २५ । २७ । २८ । २९ । इनमें इक्कीस प्रकृतियोंके उदयस्थानको कहते हैं । वह इस प्रकार है---

नरकगति[1], पंचेन्द्रियजाति[2], तैजस[3] और कार्मण शरीर[4], वर्ण[5], गन्ध[6], रस[7],

पाओग्गाणुपुव्वि-अगुरुअलहुअ-तस-बादर-पज्जत्त-थिराथिर--सुभासुभ-दुभग-अणादेज्ज-अजसगित्ति-णिमिणाणि त्ति एत्तियाओ पयडीओ घेत्तूण इगिवीसाए ठाणं होदि[1]। एत्थ भंगो एक्को चेव |१|। एदमुदयट्ठाणं कस्स होदि ? विग्गहगदीए वट्टमाणस्स णेरइयस्स। तं केवचिरं कालं होदि ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बे समया[2]।

तत्थ इमं पणुवीसाए ट्ठाणं। एदाओ चेव पयडीओ। णवरि आणुपुव्वीमवणेदूण वेउव्वियसरीर हुंडसंठाण-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-उवघाद-पत्तेयसरीराणि पुव्वुत्तपयडीसु पक्खित्ते पणुवीसण्हं ठाणं होदि[3]। तं कस्स ? सरीरंगहिदणेरइयस्स। तं केवचिरं

स्पर्श[8], नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी[9], अगुरुलघुक[10], त्रस[11], बादर[12], पर्याप्त[13], स्थिर[14], और अस्थिर[15], शुभ[16], और अशुभ[17], दुर्भग[18], अनादेय[19], अयशकीर्ति[20], और निर्माण[21], प्रकृतियोंको लेकर इक्कीस प्रकृतियोंसम्बन्धी पहला उदयस्थान होता है। यहां भंग एक ही (१) हुआ।

शंका---यह इक्कीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान किसके होता है ?

समाधान---विग्रहगतिमें विद्यमान नारकी जीवके यह इक्कीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान होता है।

शंका---यह उदयस्थान कितने काल तक रहता है ?

समाधान---यह उदयस्थान कमसे कम एक समय और अधिकसे अधिक दो समय तक रहता है।

उन नारकियोंका यह पच्चीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान है, उस स्थानमें यहीं प्रकृतियां है। इतनी विशेषता है कि पूर्वोक्त इक्कीस प्रकृतियोंमेंसे नरकगतिआनुपूर्वीको छोडकर वैक्रियिकशरीराङ्गोपाङ्ग, उपघात और प्रत्येकशरीर इन पांच प्रकृतियोंको मिला देनेसे पच्चीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान होता है।

शंका---यह पच्चीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान किसके होता है।

समाधान---जिस नारकी जीवने शरीर ग्रहण कर लिया है उसके यह पच्चीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान होता है।

शंका---यह उदयस्थान कितने काल तक रहता है ?

---

१ णामधुवोदयबारस गइ-जाईणं च तसतिजुम्माण। सुभगादेज्जजसाणं जुम्मेक्कं विग्गहे वाणू। गो. क. ५८८.   २ अ. स. प्रत्यो: गदो वट्टमाणस्स इति पाठः।

३ विग्गहकम्मसरीरे सरीरमिस्से सरीरपज्जत्ते। आणा-वचिपज्जत्ते कमेण पंचोदये काला॥ एक्कं व दो व तिण्णि व समया अंतोमुहुत्तयं तिसु वि। हेट्ठिमकालूणाओ चरिमस्स य उदयकालो दु॥ गो. क. ५८३-५८४.

का!लं होदि ? सरीरंगहिदपढमसमयमादिं कादूण जाव सरीरपज्जत्तीए अणिल्लेविद-चरिमसमओ त्ति. अंतोमुहुत्तमिदि वुत्तं होदि। भंगा वि पुव्विलभंगेण सह दोण्णि | २ |।

परघादमप्पसत्थविहायगदिं च पुव्विल्लपणुवीसपयडीसु पक्खित्ते सत्तावीस-पयडीणमुदयट्ठाणं होदि। तं कम्हि होदि ? सरीरपज्जत्तीणिव्वत्तिदपढमसमयमादिं कादूण जाव आणापाणपज्जत्तिअणिल्लोविदचरिमसमओ त्ति एदम्हि काले होदि। तं केवचिरं ? जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। एत्थ भंगसमासो तिण्णि | ३ |।

पुव्विल्लसत्तावीसपयडीसु उस्सासे पक्खित्ते अट्ठावीसपयडीणमुदयट्ठाणं होदि। तं कम्हि होदि ? आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदपढमसमयमादिं कादूण जाव भासा-पज्जत्तीए अणिल्लेविदचरिमसमओ त्ति एदम्हि ट्ठाणं होदि। तं केवचिरं ? जहण्णुक्क-

---

समाधान—शरीर ग्रहण करनेके प्रथम समयसे लेकर शरीरपर्याप्ति अपूर्ण रहनेके अन्तिम समय पर्यंत अर्थात् अन्तर्मुहूर्त काल तक यह उदयस्थान रहता है यह पूर्वोक्त कथनका तात्पर्य है

पूर्वोक्त एक भंगके साथ अब दो भंग (२) हो गये।

पूर्वोक्त पच्चीस प्रकृतियोंमें परघात तथा अप्रशस्तविहायोगति मिला देनेपर सत्ताईस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान होता है।

शंका—यह सत्ताईस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान किस कालमें होता है ?

समाधान—शरीरपर्याप्ति रचित होजानेके प्रथम समयसे लेकर आनप्राणपर्याप्ति अपूर्ण रहनेके अन्तिम समय पर्यन्त इस कालमें यह सत्ताईस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान होता है।

शंका—वह कितने काल तक होता है ?

समाधान—जघन्य और उत्कृष्ट रूपसे अन्तर्मुहूर्त काल तक होता है।

यहां तकके सब भंगोंका जोड तीन (३) हुआ।

पूर्वोक्त सत्ताईस प्रकृतियोंमें उच्छ्वासको मिला देनेपर अट्ठाईस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान होता है।

शंका—यह अट्ठाईस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान किस कालमें होता है ?

समाधान—आनप्राणपर्याप्तिके पूर्ण होजानेके प्रथम समयसे लेकर भाषापर्याप्ति अपूर्ण रहनेके अन्तिम समय तक इस कालमें होता है ?

शंका—वह कितने काल तक होता है ?

समाधान—जघन्य और उत्कृष्ट रूपसे अन्तर्मुहूर्त काल तक होता है।

---

१ मु. प्रती णिव्वत्तिपज्ज इदि पाठः।

स्सेण अंतोमुहुत्तं। एत्थ भंगसमासो चत्तारि | ४ |।

पुव्विल्लअट्ठावीसपयडीसु दुस्सरे पक्खित्ते एगूणत्तीसपयडीणमुदयट्ठाणं होदि। तं कम्हि ? भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स पढमसमयमादिं कादूण जाव अप्पप्पणो आउअट्ठिदीए चरिमसमओ त्ति एदम्हि अद्धाणे होदि। तं केवचिरं ? जहण्णेण दसवस्ससहस्साणि अंतोमुहुत्तूणाणि, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तूणतेत्तीससागरोवमाणि। एत्थ भंगसमासो पंच | ५ |।

तिरिक्खगदीए एक्कवीस-चदुवीस-पंचवीस-छव्वीस-सत्तावीस-अट्ठावीस-एगूणत्तीस-तीस-एक्कत्तीस त्ति णव उदयट्ठाणाणि। २१। २४। २५। २६। २७। २८। २९। ३०। ३१। संपदि सामण्णेण एइंदियाणं एक्कवीस-चउवीस-पंचवीस-छव्वीस-सत्तावीस त्ति पंच उदयट्ठाणाणि। आदावुज्जोवाणमणुदएण एइंदियस्स सत्तावीसट्ठाणेण विणा चत्तारि उदयट्ठाणाणि। आदावुज्जोवाण उदएण सहिदएइंदियस्स पणुवीसट्ठाणेण विणा

यहां तकके सब भंगोंका जोड चार (४) हुआ।

पूर्वोक्त अट्ठाईस प्रकृतियोंमें दुस्वरको मिला देनेपर उनतीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान होता है।

शंका—वह उनतीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान किस स्थान होता है ?

समाधान—भाषापर्याप्ति पूर्ण करनेवालेके प्रथम समयसे लेकर अपनी अपनी आयुस्थितिके अन्तिम समय पर्यन्त इस स्थानमें वह उनतीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान होता है।

शंका—वह कितने काल तक होता है ?

समाधान—जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त कम दश हजार वर्ष और उत्कृष्टसे अन्तर्मुहूर्त कम तेतीस सागरोपमप्रमाण होता है।

यहां तक सब भंगोंका योग पांच (५) हुआ।

तिर्यंचगतिमें इक्कीस, चौबीस, पच्चीस, छब्बीस, सत्ताईस, अट्ठाईस, उनतीस, तीस और इकतीस ये नौ उदयस्थान होते हैं। २१। २४। २५। २६। २७। २८। २९। ३०। ३१। अब सामान्यतः एकेन्द्रिय जीवोंके इक्कीस, चौबीस, पच्चीस, छब्बीस, और सत्ताईस ये पांच उदयस्थान होते हैं। आतप और उद्योत इन दो प्रकृतियोंके उदयके विना एकेन्द्रिय जीवके सत्ताईस प्रकृतियोंवाले स्थानसे रहित शेष चार उदयस्थान होते हैं। आतप और उद्योतके उदय सहित एकेन्द्रिय जीवके पच्चीस प्रकृतियोंवाले स्थानसे रहित शेष चार उदयस्थान

चत्तारि उदयट्ठाणाणि होंति ।

तत्थ आदावुज्जोवुदयविरहिदएइंदियस्स भण्णमाणे तिरिक्खगदी-एइंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-तिरिक्खगदिपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुगलहुअ-थावर-बादर-सुहुमाणमेक्कदरं पज्जत्तापज्जत्ताणमेक्कदरं थिराथिरं सुभासुभं दुब्भगं अणादेज्जं जस-अजसकित्तीणमेक्कदरं णिमिणमिदि एदासिं एक्कवीसपयडीण उदओ विग्गहगदीए वट्टमाणस्स एइंदियस्स होदि । केवचिरं ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्णि समया । एत्थ अक्खपरावत्तं काऊण भंगा उप्पाएदव्वा । तत्थ अजसकित्तिउदएण चत्तारि भंगा । जसकित्तिउदएण एक्को चेव । कुदो ? सुहुम-अपज्जत्तेहि सह जसकित्तीए उदयाभावा, जसकित्तीए सह सुहुम-अपज्जत्ताणं उदयाभावादो वा । तेणेत्थ भंगा पंचेव होंति[1] । ५ ।

पुव्विल्लएक्कवीसपयडीसु आणुपुव्वीमवणेदूण ओरालियसरीर-हुंडसंठाण-उवघाद-पत्तेय-साधारणसरीराणमेक्कदरं पक्खित्ते चदुवीसपयडीणं उदयट्ठाणं होदि । तं कम्हि होदि ?

होते हैं । उनमें आतप और उद्योतसे रहित एकेन्द्रिय जीवके उदयस्थान कहने पर---

तिर्यंचगति[1], एकेन्द्रियजाति[2], तैजस[3], और कार्मण शरीर[4], वर्ण[5], गंध[6] रस[7], स्पर्श[8], तिर्यंचगतिप्रायोग्यानुपूर्वी[9], अगुरुलघुक[10], स्थावर[11], बादर और सूक्ष्म इन दोनोंमेंसे कोई एक[12], पर्याप्त और अपर्याप्तमेंसे कोई एक[13], स्थिर[14], और अस्थिर[15], शुभ[16], और अशुभ[17] दुर्भग[18], अनादेय[19], यशकीर्ति और अयशकीर्तिमेंसे कोई एक[20], और निर्माण[21], इन इक्कीस प्रकृतियोंका उदय विग्रहगतिमें वर्तमान एकेन्द्रिय जीवके होता है ।

शंका---यह इक्कीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान कितने काल तक रहता है ?

समाधान---जघन्यतः एक समय और उत्कृष्टसे तीन समय तक यह उदयस्थान रहता है ।

यहां अक्षपरावर्तन करके भंग निकालना चाहिये । उनमें अयशकीर्तिके उदयके साथ (बादर-सूक्ष्म और पर्याप्त-अपर्याप्तके विकल्पसे) चार भंग होते हैं । यशकीर्तिके उदयके साथ एक ही भंग होता है क्योंकि, सूक्ष्म और अपर्याप्तके साथ यशकीर्तिके उदयका अभाव है, अथवा यों कहो कि यशकीर्तिके साथ सूक्ष्म और अपर्याप्त प्रकृतियोंका उदय नहीं होता । इस कारण इस उदयस्थानमें पांच ही (५) भंग होते हैं ।

पूर्वोक्त इक्कीस प्रकृतियोंमेंसे आनुपूर्वीको छोड़कर औदारिकशरीर, हुंडसंस्थान, उपघात, तथा प्रत्येक और साधारण शरीरोंमेंसे कोई एक इन चारको मिला देनेपर चौबीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान हो जाता है ।

शंका---यह चौबीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान किस स्थानमें होता है ?

---

१ तत्थासत्थाणारय-साहारण-सुहुमगे अपुण्णे य । सेसेग-वियलऽसण्णीजुदठाणे जसजुगे भंगा ॥ गो. क. ६००

गहिदसरीरपढमसमयप्पहुडि जाव सरीरपज्जत्तीए अणिल्लेविदचरिमसमओ त्ति एदम्हि ट्ठाणे[1]। केवचिरं ? जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। एत्थ अजसगित्तीए उदएण अट्ठ भंगा। जसकित्तीए उदएण एक्को चेव। कुदो ? जसकित्तीए सह सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं उदयाभावा। तेण सव्वभंगसमासो णव |९|।

पुणो पज्जत्तमवणिय सेसचउवीसपयडीसु परघादे पक्खित्ते पंचवीसपयडीण-मुदयट्ठाणं होदि। एत्थ भंगा अजसकित्तीउदएण चत्तारि। कुदो ? अपज्जत्तउदयस्स अभावादो। जसकित्तिउदएण एक्को चेव। तेण सव्व भंगसमासो[2] पंच ५। तं कम्हि ? सरीरपज्जत्तयदपढमसमयमादिं कादूण जाव आणापाणपज्जत्तीए अणिल्लेवि-दचरिमसमओ त्ति एदम्हि ट्ठाणे। तं केवचिरं ? जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं।

समाधान—शरीर ग्रहण करनेके प्रथम समयसे लेकर शरीरपर्याप्ति अपूर्ण रहनेके अन्तिम समय तकके स्थानमें यह उदयस्थान होता है।

शंका—यह उदयस्थान कितने काल तक होता है ?

समाधान—जघन्य और उत्कृष्टसे अन्तर्मुहूर्त काल तक होता है।

यहां अयशकीर्तिके उदयसहित (बादर-सूक्ष्म, पर्याप्त-अपर्याप्त और प्रत्येकसाधारणके विकल्पसे) आठ भंग होते हैं। यशकीर्तिके उदयसहित एक ही भग है। क्योंकि, यशकीर्तिके साथ सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण, इन प्रकृतियोंका उदय नहीं होता। इस प्रकार इस स्थानमें सब भंगोंका योग नौ (९) हुआ।

पूर्वोक्त उदयस्थानकी प्रकृतियोंमेंसे अपर्याप्तको छोड़कर शेष चौबीस प्रकृतियोंमें परघातको मिला देने पर पच्चीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान होता है। यहांपर अयशकीर्तिके उदयके साथ (बादर-सूक्ष्म- और प्रत्येक-साधारणके विकल्पसे) चार होते हैं, क्योंकि, यहां-पर अपर्याप्तका उदय नहीं होता। यशकीर्तिके उदयसहित पूर्ववत् एक ही भंग होता है। इससे भंगोंका योग पांच (५) हुआ।

शंका—यह पच्चीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान किस स्थानमें होता है ?

समाधान—शरीरपर्याप्ति पूर्ण होनेके प्रथम समयसे लेकर आनप्राणपर्याप्ति अपूर्ण रहनेके अन्तिम समय तकके स्थानमें यह उदयस्थान होता है।

शंका—यह उदयस्थान कितने काल तक होता है।

समाधान—जघन्य और उत्कृष्टसे इस उदयस्थानका अन्तर्मुहूर्त काल है।

---

१ मिस्सम्मि तिअंगाणं संठाणाणं च एगदरगं तु। पत्तेयदुगाणेक्को उवघादो होदि उदयगदो ॥ गो. क. ५८९.

२ तेण भंगसमासो इति पाठः।

तस्सेव आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स पुव्विल्लपंचवीसपयडीसु उस्सासे पक्खित्ते छव्वीसपयडीणमुदयट्ठाणं होदि। तं कस्स ? आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स। केवचिरं ? जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तूणबावीसवस्स-सहस्साणि। एत्थ भंगा पुव्वं व पंचेव होंति |५|।

आदावुज्जोवुदयसहिदएइंदियस्स वुच्चदे— एक्कवीस-चदुवीसपयडिउदयट्ठाणाणं पुव्वं व परूवणा कादव्वा। णवरि दोण्हं पि उदयट्ठाणाणं जसकित्ति-अजस-कित्तिउदएण दोण्णि दोण्णि चेव भंगा होंति। कुदो ? आदावुज्जोवुदय-भावीणं सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीराणं उदयाभावा। पुणो एदे पुव्वुत्तएक्कवीस-चउवीसपयडिउदयट्ठाणाणं भंगेसु लद्धा त्ति अवणेदव्वा। पुणो सरीरपज्जत्तीए पज्जत्त-यदस्स परघादे आदावुज्जोवाणामेक्कदरं च पुव्विल्लचदुवीसपयडीसु पक्खित्ते पणुवीस-

---

आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए उसी जीवके पूर्वोक्त पच्चीस प्रकृतियोंमें उच्छ्वासके मिला देनेपर छब्बीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान होता है।

शंका—यह छब्बीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान किसके होता है ?

समाधान—आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए एकेन्द्रिय जीवके यह छब्बीस प्रकृतियों-वाला उदयस्थान होता है।

शंका—यह उदयस्थान कितने काल तक रहता है ?

समाधान—जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्टसे अन्तर्मुहूर्तसे हीन बाईस हजार वर्ष तक यह उदयस्थान रहता है।

यहां पूर्ववत् पांच ही (५) भंग होते हैं।

अब आतप और उद्योत नामकर्म प्रकृतियोंके साथ होनेवाले एकेन्द्रियके उदयस्थानोंको कहते हैं— इनमें इक्कीस और चौबीस प्रकृतियोंवाले उदयस्थानोंकी पूर्ववत् प्ररूपणा करनी चाहिये। विशेषता केवल इतनी है कि उक्त दोनों उदयस्थानोंके यशकीर्ति और अयशकीर्ति प्रकृतियोंके उदय सहित केवल दो दो ही भंग होते हैं, क्योंकि जिन जीवोंके आतप और उद्योतका उदय होनेवाला है उनके सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणशरीर इन प्रकृतियोंका उदय नहीं होता। किन्तु ये दो दो भंग पूर्वोक्त इक्कीस व चौबीस प्रकृतिसम्बन्धी उदयस्थानोंमें पाये जाते हैं, अतः उन्हें निकाल देना चाहिये।

पुनः शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए जीवके परघात तथा आतप और उद्योत इन दोनोंमेंसे कोई एक, इस प्रकार दो प्रकृतियोंको पूर्वोक्त चौबीस प्रकृतियोंमें मिला देनेपर

पयडिट्ठाणमुल्लंघिय छव्वीसपयडिट्ठाणमुप्पज्जदि। एदं कस्स ? सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स। केवचिरं ? जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। एत्थ भंगा चत्तारि हवंति। एदे चत्तारि भंगे पढमछव्वीसभंगेसु पक्खित्ते णव भंगा होंति। तस्सेव आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स छव्वीपयडीसु उस्सासे पक्खित्ते सत्तावीसपयडीणं उदयट्ठाणं होदि। एत्थ भंगा चत्तारि चेव। सव्वेइंदियाणं सव्वभंगसमासो बत्तीस | ३२ |।

पच्चीस प्रकृतियोंवाले उदयस्थानका उल्लंघनकर छब्बीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान उत्पन्न होता है।

शंका—यह छब्बीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान किसके होता है ?

समाधान—शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए एकेन्द्रिय जीवके होता है।

शंका—इस छब्बीस प्रकृतियोंवाले उदयस्थानका समय कितना है ?

समाधान—जघन्य और उत्कृष्टसे अन्तर्मुहूर्त काल है।

यहां (यशकीर्ति-अयशकीर्ति तथा आताप-उद्योतके विकल्पसे चार भंग हैं। इन चार भंगोंको प्रथम छब्बीस प्रकृतियोंवाले उदयस्थानसम्बन्धी पांच भंगोंमें मिला देनेपर नौ भंग होते हैं।

आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए उसी एकेन्द्रिय जीवके उक्त छब्बीस प्रकृतियोंमें उच्छ्वासको मिलादेनेपर सत्ताईस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान होता है। यहां (यशकीर्ति-अयशकीर्ति और आताप-उद्योतके विकल्पसे चार भंग हैं।

समस्त एकेन्द्रियोंके सब उदयस्थानसम्बन्धी भंगोंका योग बत्तीस (३२) होता है।

आताप-उद्योत रहित	२१	प्र. स्थान	५	
,, ,,	२४	,,	२	
,, ,,	२५	,,	५	
,, ,,	२६	,,	५	
आताप-उद्योत सहित	२१	,,	(२)	ये पूर्वोक्त भंगोंमें आ चुके हैं
,, ,,	२४	,,	(२)	इसलिये इन्हें नहीं जोडा।
,, ,,	२६	,,	४	
,, ,,	२७	,,	४	
			३२	

विशेषार्थ—गोम्मटसार कर्मकाण्डकी ५८८ आदि गाथाओंमें जो उदयस्थान बतलाये गये हैं उनमें २१ और २४ प्रकृतिके उदयस्थानोंमें आताप-उद्योत प्रकृतियोंके उदयका कहीं उल्लेख या संकेत नहीं किया गया। विग्रहगतिमें व अपर्याप्त अवस्थामें इन

सुदयट्ठाणाभावादो । उज्जोवुदयविरहिदपंचिंदियतिरिक्खस्स भण्णमाणे तत्थ इदमेक्कवीसाए ट्ठाणं होदि - तिरिक्खगदि-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण गंध-रस फास-तिरिक्खगदिपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुगलहुग-तस-बादर पज्जत्तापज्जत्ताणमेक्कदरं थिराथिरं सुभासुभं सुभग-दुभगाणमेक्कदरं आदेज्ज अणादेज्जाणमेक्कदरं जसकित्ति-अजसकित्तीणमेक्कदरं णिमिणणामं च एदासिमेक्कवीसपयडीणमेक्कं चेव ट्ठाणं । एत्थ पज्जत्तउदएण अट्ठ भंगा, अपज्जत्तउदएण एक्को । कुदो ? सुभग-आदेज्ज जसकित्तीहि सह एदस्सुदयाभावा । सव्वभंगसमासो णव । ९ । सरीरे गहिदे आणुपुव्विमवणिय ओरालियसरीरं छण्हं संठाणाणं एक्कदरं ओरालियसरीरअंगोवंग छण्हं संघडणाणमेक्कदरं उवघाद-पत्तेयसरीरमिदि एदेसु कम्मेसु पक्खित्तेसु छव्वीसाए ट्ठाणं होदि । एत्थ पज्जत्तउदएण अट्ठासीदा बे सदा भंगा होंति । अपज्जत्तउदएण एक्को चेव । कुदो ? सुहेहि सह अपज्जत्तस्स उदयाभावा । एत्थ सव्वभंगसमासो एक्कारसूणतिसदमेत्तो । २८९ । एत्थ भंगविसयणिच्छयसमुप्पायणट्ठमेदाओ गाहाओ वत्तव्वाओ । तं जहा—

ही उदयस्थान होते हैं, क्योंकि, उसके अट्ठाईस प्रकृतिक उदयस्थान नहीं होता ।

अब उद्योतके उदयसे रहित पंचेन्द्रिय तिर्यंचके उदयस्थान कहने पर उनमें यह इक्कीस प्रकृतिक उदयस्थान होता है—तिर्यंचगति[1], पंचेन्द्रियजाति[2], तैजस[3], और कार्मण शरीर[4], वर्ण[5], गंध[6] रस[7], स्पर्श[8], तिर्यंचगतिप्रायोग्यानुपूर्वी[9], अगुरुलघुक[10], त्रस[11], बादर[12], पर्याप्त और अपर्याप्तमेंसे कोई एक,[13] स्थिर[14], अस्थिर[15], शुभ[16], अशुभ[17]. सुभग और दुर्भगमेंसे कोई एक[18], आदेय और अनादेयमेंसे कोई एक[19], यशकीर्ति और अयशकीर्तिमेंसे कोई एक[20], और निर्माण[21], इन इक्कीस प्रकृतियोंका एक ही स्थान होता है । यहां पर्याप्तके उदय सहित (सुभग-दुर्भग आदेय-अनादेय और यशकीर्ति अयशकीर्ति विकल्पोंसे) आठ भंग होते हैं । अपर्याप्तके उदय सहित केवल एक ही भंग है, क्योंकि, सुभग आदेय और यशकीर्ति प्रकृतियोंके साथ अपर्याप्तका उदय नहीं होता । इन सब भंगोंका योग नौ (९) है ।

शरीर ग्रहण करलेनेपर आनुपूर्वीको निकालकर औदारिकशरीर छह संस्थानोंमेंसे कोई एक संस्थान औदारिकशरीरांगोपांग छह संहननोंमेंसे कोई एक संहनन, उपघात, और प्रत्येकशरीर इन छह कर्मोंको मिला देनेपर छब्बीस प्रकृतिक उदयस्थान होता है । यहां पर्याप्तके उदय सहित (सुभग-दुर्भग, आदेय-अनादेय, यशकीर्ति-अयशकीर्ति छह संस्थान और छह संहनन, इनके विकल्पोंसे $2 \times 2 \times 2 \times 6 \times 6 = 288$) दो सौ अठासी भंग होते हैं । अपर्याप्तके उदय सहित एक ही भंग है, क्योंकि शुभ प्रकृतियोंके साथ अपर्याप्तका उदय नहीं होता । यहां सब भंगोंका योग ग्यारह कम तीनसौ अर्थात् दोसौ नवासी (२८९) होता है ।

यहां भंगोंके विषयमें निश्चय उत्पन्न करानेके लिये ये गाथायें कहने योग्य हैं । जैसे—

विगलिंदियाणं सामण्णेण एक्कवीस छव्वीस-अट्ठावीस-एऊणत्तीस-तीस-एक्कत्तीस त्ति छ उदयट्ठाणाणि। २१। २६। २८। २९। ३०। ३१। उज्जोवुदयविरहिदविगलिंदियस्स पंचेवुदयट्ठाणाणि होंति, एक्कत्तीसुदयट्ठाणाभावा। उज्जोवुदयसंजुत्तविगलिंदियस्स वि पंचेवुदयट्ठाणाणि, परघादुज्जोव-अप्पसत्थविहायगदीणमक्कमप्पवेसेण अट्ठावीसट्ठाणाणुप्पत्तीदो।

उज्जोवुदयविरहिदबेइंदियस्स ताव उच्चदे—तत्थ इमं इगिवीसाए ट्ठाणं तिरिक्खगदि-बेइंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण गंध-रस-फास-तिरिक्खगदिपाओग्गाणुपुव्वि-अगुरुअलहुअ-तस-बादर पज्जत्तापज्जत्ताणमेक्कदरं थिराथिर-सुभासुभ-दुभग-अणादेज्ज जस-अजसकित्तीणमेक्कदरं णिमिणणामं च,एदासिमेक्कवीसपयडीणमेक्कंठाणं। तं कस्स?

प्रकृतियोंका उदय भी संभव नहीं प्रतीत होता। धवलाकारने स्वयं पृष्ठ ३८ पर दोनों प्रकृतियोंके साथ अपर्याप्त प्रकृतिके उदयका अभाव बतलाया है। अतएव यहां पर ऐसा अर्थ लेना चाहिये कि जिन एकेन्द्रिय जीवोंके आगे चलकर शरीरपर्याप्ति पूर्ण हो जाने पर आतप या उद्योत प्रकृतिका उदय होनेवाला है, उनके सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण प्रकृतियोंका उदय नहीं होगा अतएव तत्सम्बन्धी भंग भी उनके नहीं होंगे। केवल यशकीर्ति और अयशकीर्तिके विकल्पसे दो दो ही भंग होंगे।

विकलेन्द्रिय जीवोंके सामान्यतः इक्कीस छब्बीस अट्ठाईस, उनतीस तीस और इकतीस प्रकृतियोंके सम्बन्धसे छह उदयस्थान होते हैं। २१। २६। २८। २९। ३०। ३१। उद्योतके उदयसे रहित विकलेन्द्रिय जीवके पांच उदयस्थान होते हैं, क्योंकि, उनके इकतीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान नहीं होता। उद्योतके उदय सहित विकलेन्द्रियके भी पांच ही उदयस्थान होते हैं, क्योंकि, उसके परघात, उद्योत और प्रशस्तविहायोगति, इन तीन प्रकृतियोंका एक साथ प्रवेश होनेके कारण अट्ठाईस प्रकृतियोंवाले उदयस्थानकी उपपत्ति नहीं बनती।

अब पहले उद्योतोदयसे रहित द्वीन्द्रिय जीवके उदयस्थान कहते हैं। उनमें यह इक्कीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान है—तिर्यग्गति[1], द्वीन्द्रियजाति[2], तैजस[3], और कार्मण शरीर[4], वर्ण[5], गंध[6], रस[7], स्पर्श[8], तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी[9], अगुरुलघु[10], त्रस[11], बादर[12], पर्याप्त और अपर्याप्तमेंसे कोई एक[13], स्थिर[14], अस्थिर[15], शुभ[16], अशुभ[17], दुर्भग[18], अनादेय[19], यशकीर्ति और अयशकीर्तिमेंसे कोई एक[20], और निर्माण[21], इन इक्कीस प्रकृतियोंका एक उदयस्थान होता है।

शंका—यह इक्कीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान किस जीवके होता है?

बेइंदियस्स विग्गहगदीए वट्टमाणस्स । तं केवचिरं ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बे समया । जसगित्तिउदएण एक्को भंगो । कुदो ? अपज्जत्तोदएण सह जसकित्तीए उदयाभावा । अजसगित्तिउदएण बे भंगा । कुदो ? पज्जत्तापज्जत्ताणमुदएहि सह अजसगित्तिउदयस्स संभवुवलंभा । एत्थ सव्वभंगसमासो तिण्णि ३ ।

एदासु एक्कवीसपयडीसु आणुपुव्विमवणेदूण गहिदसरीरपढमसमए ओरालियसरीर हुंडसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-असंपत्तसेवट्टसंघडण-उवघाद-पत्तेयसरीरेसु पक्खित्तेसु छव्वीसाए ट्ठाणं होदि । एत्थ भंगसमासो तिण्णि | ३ | । सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स पुव्वुत्तपयडीसु अपज्जत्तमवणिय परघादअप्पसत्थविहायगदीसु पक्खित्तासु अट्ठावीसाए ट्ठाणं होदि । एत्थ जसकित्तिउदएण एक्को भंगो, अजसकित्तिउदएण वि एक्को चेव कुदो ? पडिवक्खपयडीणमभावादो । एत्थ सव्वभंगा दो चेव | २ |

आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स पुव्वुत्तपयडीसु उस्सासे पक्खित्ते एगुण-

---

समाधान—यह उदयस्थान विग्रहगतिमें वर्तमान द्वीन्द्रिय जीवके होता है।

शंका—यह उदयस्थान कितने काल तक होता है?

समाधान—जघन्यसे एक समय और उत्कृष्टसे दो समय तक रहता है।

यशकीर्तिके उदयके साथ एक ही भंग होता है, क्योंकि, अपर्याप्तप्रकृतिके उदयके साथ यशकीर्तिका उदय नहीं होता। अयशकीर्तिके उदय सहित दो भंग होते हैं, क्योंकि पर्याप्त और अपर्याप्तके उदयके साथ अयशकीर्तिका उदय होना संभव है। इस प्रकार यहां सब भंगोंका योग तीन (३) हुआ।

इन इक्कीस प्रकृतियोंमेंसे आनुपूर्वीको निकालकर शरीरग्रहण करनेके प्रथम समयमें औदारिकशरीर, हुंडसंठाण, औदारिकशरीरांगोपांग, असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन, उपघात और प्रत्येकशरीर, इन छह प्रकृतियोंको मिला देनेपर छब्बीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान होता है। यहां भंगोंका योग (पूर्वोक्तानुसार ही) तीन (३) होता है।

शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए द्वीन्द्रिय जीवके पूर्वोक्त छब्बीस प्रकृतियोंमेंसे अपर्याप्तको निकालकर परघात और अप्रशस्तविहायोगति मिला देनेपर अट्ठाईस प्रकृतिक उदयस्थान होता है। यहां यशकीर्तिके उदयसहित एक ही भंग है। और अयशकीर्तिके उदय सहित भी एक ही भंग है, क्योंकि, यहां भी प्रतिपक्षी प्रकृतियोंका अभाव है। यहां सब भंग केवल दो (२) हैं।

आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए द्वीन्द्रिय जीवके पूर्वोक्त अट्ठाईस प्रकृतियोंमें

तीसाए ट्ठाणं भवदि। एत्थ वि भंगा दो चेव |२|। भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स पुव्वुत्तपयडीसु दुस्सरे पक्खित्ते तीसाए ट्ठाणं होदि। एत्थ भंगा दो चेव |२|।

संपहि उज्जोवुदयसंजुत्तबेइंदियस्स भण्णमाणे एक्कवीस-छव्वीसाओ जधा पुव्वं वुत्ताओ तधा वत्तव्वं। पुणो छव्वीसाए उवरि परघादुज्जोव-अप्पसत्थविहायगदीसु पक्खित्तासु एगूणतीसाए ट्ठाणं होदि। जसकित्तिउदएण एक्को भंगो, अजसकित्तिउदएण एक्को। एत्थ भंगसमासो दोण्णि |२|। पुणो एदेसु दोसु पढमेगूणत्तीसभंगेसु पक्खित्तेसु चत्तारि भंगा होंति। आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स उस्सासे पक्खित्ते तीसाए ट्ठाणं होदि। एत्थ वि भंगा दो चेव। एदेसु पढमतीसभंगेसु पक्खित्तेसु चत्तारि भंगा होंति। भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स दुस्सरे पक्खित्ते एक्कत्तीसाए ट्ठाणं होदि। एत्थ भंगा दोण्णि। सव्वभंगसमासो अट्ठारस। तिण्हं विगलिंदियाण भंग-

---

उच्छ्वासके मिला देनेपर उनतीस प्रकृतिके उदयस्थान होते है। यहां भी दो ही (२) भंग होते हैं।

भाषापर्याप्तिसे पर्याप्त हुए द्वीन्द्रिय जीवके पूर्वोक्त उनतीस प्रकृतियोंमें दुस्वरके मिला देनेपर तीस प्रकृतिक उदयस्थान होता है। यहां भी दो ही (२) भंग होते हैं।

अब उद्योतके उदय सहित द्वीन्द्रिय जीवके उदयस्थान कहने पर इक्कीस और छब्बीस प्रकृतिक उदयस्थान तो जैसे पहले कह आये हैं उसी प्रकार कहना चाहिये। फिर छब्बीसके ऊपर परघात, उद्योत अप्रशस्तविहायोगति, इन तीनको मिला देनेपर उनतीस प्रकृतिक उदयस्थान होता है। यशकीर्तिके उदय सहित एक भंग होता है और अयशकीर्तिके उदय सहित एक। इस प्रकार यहां भंगोंका योग दो (२) होता है। फिर इन दो भंगोंमें पूर्वोक्त उनतीस प्रकृतिक उदयस्थानसम्बन्धी दो भंगोंको मिला देने पर चार (४) भंग होते हैं।

आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए द्वीन्द्रिय जीवके पूर्वोक्त उनतीस प्रकृतियोंमें उच्छ्वास और मिला देनेपर तीस प्रकृतिक उदयस्थान होता है। यहां भी भंग दो ही (२) हैं इनमें प्रथम तीस प्रकृतिक उदयस्थानसम्बन्धी दो भंगोंको मिला देनेपर चार (४) भंग होते हैं।

भाषापर्याप्तिसे पर्याप्त हुए द्वीन्द्रिय जीवके पूर्वोक्त प्रकृतियोंमें दुस्वर प्रकृतिके मिला देनेपर इकतीस प्रकृतिक उदयस्थान होता है। यहां भंग दो (२) होते हैं।

सब भंगोंका योग अठारह (१८) होता है।

समासमिच्छामो त्ति अट्ठारससु तिगुणिदेसु चउप्पण्णभंगा होंति | ५४ |। एत्थ सामित्तादिवियप्पा णेरइयाणं व वत्तव्वा। णवरि बेइंदियादीणं तीस एक्कतीसाणं कालो जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण जहाकमेण बारस वस्साणि, एगुणवण्णरादिंदियाणि, छम्मासा अंतोमुहुत्तूणा।

पंचिंदियतिरिक्खस्स सामण्णेण एक्कवीस-छव्वीस-अट्ठावीस-एगुणतीस[1]-तीस-एक्कत्तीसेत्ति छउदयट्ठाणाणित्ति[2]। २१। २६। २८। २९। ३०। ३१। वुज्जोवुदयविरहिदपंचिंदियतिरिक्खस्स पंच उदयट्ठाणाणि होंति। कुदो? तत्थेक्कत्तीसाए उदयाभावा। वुज्जोवुदयसंजुत्तपंचिंदियतिरिक्खस्स वि पंचेवुदयट्ठाणाणि होंति। कुदो? तत्थट्ठवी

	उद्योत रहित		उद्योत सहित	
२१ प्रकृतियोंवाले स्थानभंग	३		३	) ये छह भंग पूर्वके ही समान
२६ ,, ,,	३		३	) होनेसे नहीं जोड़े गये।
२८ ,, ,,	२		×	
२९ ,, ,,	२	+	२	
३० ,, ,,	२	+	२	
३१ ,, ,,	×		२	
	१२	+	६ = १८	

अब हमें द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय, इन तीनों विकलेन्द्रिय जीवोंके उदयस्थानोंके भंगोंका योग चाहिये। अतएव अठारहको तीनसे गुणा कर देनेपर चौवन (५४) भंग हो जाते हैं। यहां स्वामित्व आदिके विकल्प जैसे नारकी जीवोंकी प्ररूपणामें पहले कह आये हैं उसी प्रकार यहां भी कहना चाहिये। विशेषता केवल इतनी है कि द्वीन्द्रियादि जीवोंके तीस और इकतीस प्रकृतिक उदयस्थानोंका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्टसे अन्तर्मुहूर्त कम क्रमशः बारह वर्ष उनंचास रात्रि-दिवस और छह मास होता है। अर्थात् तीस और इकतीस प्रकृतिक उदयस्थानोंका जघन्य काल तो तीनों विकलेन्द्रिय जीवोंके अन्तर्मुहूर्त ही होता है किन्तु उत्कृष्ट काल द्वीन्द्रियोंके अन्तर्मुहूर्त कम बारह वर्ष, त्रीन्द्रियोंके अन्तर्मुहूर्त कम उनंचास रात्रि-दिन और चतुरिन्द्रिय जीवोंके अन्तर्मुहूर्त कम छह मास होता है।

पंचेन्द्रिय तिर्यंचके सामान्यसे इक्कीस छब्वीस, अट्ठाईस, उनतीस, तीस और इकतीस प्रकृतिक छह उदयस्थान होते हैं। २१। २६। २८। २९। ३०। ३१। उद्योतके उदयसे रहित पंचेन्द्रिय तिर्यंचके पांच उदयस्थान होते हैं, क्योंकि, उसके इकतीस प्रकृतियोंका उदय नहीं होता। उद्योतके उदय सहित पंचेन्द्रिय तिर्यंचके भी पांच

१ मु. प्रतौ गुणतीस इति पाठः। २ मु. प्रतौ ट्ठाणाणि इति पाठः।